जगत् की अवधारणा

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,
पूर्व कुलपति, सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

दर्शन यथार्थ दृष्टि है। भारतीय दर्शन अनेक ऋषियों के विचारों और मनन का परिणाम है। जीव, आत्मा, जगत्, ईश्वर के सम्बन्ध में प्रायः सभी दर्शनों का अपना भिन्न मत है। भारतीय दर्शनों में चार्वाक, बौद्ध और जैन वेद प्रामाण्य को स्वीकार नहीं करते। सांख्य–योग, न्याय–वैशेषिक, मीमांसा और वेदान्त वेद प्रामाण्य को स्वीकार करते है। जगत् के सम्बन्ध में इन दर्शनों का मत विचारणीय है। चार्वाक दर्शन जगत् को ही यथार्थ मानता है। ईश्वर और आत्मा के अस्तित्व में विश्वास नहीं करता। बौद्ध दर्शन अनात्मवादी दर्शन है। बौद्ध दर्शन के दोनों प्रमुख सम्प्रदाय शून्यवाद और विज्ञानवाद का जगत् के सम्बन्ध में भिन्न–भिन्न मत हैं।

जैन दर्शन षड्द्रव्यवादी है। षड्द्रव्यों में धर्म, अधर्म आकाश, काल, पुद्गल और जीव द्रव्य की गणना होती है। जैन दर्शन चेतन और अचेतन दोनों तत्वों को स्वीकार करता है। जैन दर्शन में जगत् के लिए लोक शब्द का व्यवहार हुआ है। ये सम्पूर्ण तत्व लोकव्यापी है। आत्मा जब मुक्त होती है तो वह अलोकाकाश में विराजमान होती है। अलोकाकाश वह स्थान है जहां लोक की सीमा समाप्त होती है। द्रव्य के मुख्यतः दो भेद है–जीव द्रव्य और अजीव द्रव्य। जीव या आत्मा जैन दर्शन में एक स्वतंत्र द्रव्य है। इसका लक्षण है–चेतना। चेतना को जीव का असाधारण धर्म बतलाया गया है–चेतना लक्षणो जीवः। अजीव द्रव्य वे द्रव्य हैं जिसमें चेतना नहीं होती। अजीव द्रव्य के पांच भेद है– पुद्गल, धर्म, अधर्म, आकाश और काल। यह विश्व छह द्रव्यों की रचना है। इसमें दो प्रकार के जीव हैं– मुक्त जीव और संसारी जीव। मुक्त जीव को परमात्मा, ईश्वर, सर्व शक्तिमान ,सिद्ध, शुद्ध जीव, आदि नाम से जाना जाता है। इन मुक्त जीवों के अतिरिक्त सभी जीव संसारी जीव हैं। जैन दर्शन में जीव शब्द आत्मा और शरीर दोनों के सन्दर्भ में है। यहां पर जीव का संबंध सांसारिक जीवों के लिए प्रयुक्त किया जा रहा है।

सम्पूर्ण संसार जीवों से भरा है। संसार में जन्म लेने वाला जीव अज्ञान के कारण ऐसे कर्मों का अर्जन करता है जिसके कारण उसे बंधन ग्रस्तता प्राप्त होती है इसलिए जैन दर्शन में प्रत्येक जीव अपने कर्मो का स्वयं जिम्मेदार है और कर्म के परिणामों की भी जिम्मेदारी स्वयं उसकी है यह जीव का कर्त्ता–भोक्तापन की विशेषता है। कर्त्तृत्व व भोक्तृत्व संसारी जीव में ही पाया जाता है। अजीव द्रव्यों में पुद्गल, धर्म, अधर्म, आकाश और काल द्रव्य आते है। सृष्टि की रचना इन्हीं द्रव्यों के सहयोग से हुई है। जैन दर्शन में संसार को अनादि और अनन्त मानते हुए जगत को यथार्थ सत्ता के रूप में परिभाषित किया गया है। जगत स्वयं में स्वतंत्र अस्तित्ववान है। यह अपनी सत्ता के लिए किसी चेतन पर आधारित नहीं है। जैन दर्शन सम्पूर्ण संसार की सत्ता भौतिक और अभौतिक पदार्थों की उपस्थिति के आधार पर मानता है। संसार में कुछ मूर्त पदार्थ हैं कुछ अमूर्त पदार्थ भी। सम्पूर्ण संसार द्रव्यों से युक्त माना गया है। पुद्गल रूप, रस, गंध और स्पर्शवान होता है।

जीव तथा पुद्गल को गमन कराने में उदासीन सहायक जो तत्व होता है उसे धर्म कहते हैं। आगमों में कहा गया है–गति सहायो धर्मः। जो द्रव्य लोक में गतिशील सभी द्रव्यों जीव और सभी पुद्गलो की गति में अनन्य सहायक होता है वह धर्म द्रव्य है। जो द्रव्य लोक में स्थित सभी द्रव्यों जीव और पुद्गलो की स्थिति में अनन्य सहायक होता है वह अधर्म द्रव्य है। इसके बिना किसी भी प्रकार की स्थिति संम्भव नहीं है। आगमों में कहा गया है–स्थिति सहायो अधर्मः। जैन दर्शन में खाली स्थान को आकाश कहते है। आकाश सभी वस्तुओं को आश्रय प्रदान करता है। इसे एक सर्व व्यापक अखण्ड, अमूर्त, अवर्ण द्रव्य के रूप में स्वीकार किया गया है। काल शब्द से सभी परिचित हैं। काल को मापने के लिए वर्ष, महीने, दिन, पहर, घन्टे, मिनिट, सेकेंड, मुहूर्त, क्षण, पल आदि का प्रयोग होता है।

सांख्य दर्शन जगत् को प्रकृति का परिणाम मानता है। सांख्यमतानुसार सृष्टि का वैज्ञानिक क्रम है। सबसे पहले 'महत्' या बुद्धि का प्रादुर्भाव होता है। यह प्रकृति का प्रथम विकार है। बाह्य जगत् की दृष्टि से यह विराट बीज स्वरूप है, अतएव 'महत्तत्व' कहलाता है। आभ्यंतरिक दृष्टि से यह वह बुद्धि है जो जीवों में विद्यमान रहती है। प्रकृति का दूसरा विकार है अंहकार।

यह महत्तत्व का परिणाम है। इसी अंहकार के कारण पुरुष मिथ्याभ्रम में पड़कर अपने को कर्त्ता, और स्वामी समझने लगता है। पंच ज्ञानेन्द्रियां ये हैं– नेत्रेन्द्रिय (आंख) श्रवणेन्द्रिय (कान) घ्राणेन्द्रिय (नाक) रसेन्द्रिय (जीभ) और स्पर्शनेन्द्रिय (त्वचा)। इनमें क्रमशः रूप, शब्द, गंध, स्वाद और स्पर्श इन विषयों का ज्ञान होता है। ये अंहकार के परिणाम हैं और पुरुष के निमित उत्पन्न होते हैं। पुरुष की विषयभागेच्छा ही विषयों और इंद्रियों की उत्पति का कारण है। कर्मेन्द्रिय इन अगों में अवस्थित है–मुख, हाथ, पैर, मलद्वार और जननेन्द्रिय। मन आभ्यंतरिक इंद्रिय है जो कर्मेन्द्रिय और ज्ञानेन्द्रिय दोनों का साथ देता है। मन ही उन्हें अपने–अपने विषयों में प्रेरित करता हैं। वैशेषिक दर्शन के अनुसार जगत् परमाणुओं से निर्मित है। वेदान्त दर्शन जगत् को मिथ्या मानता है। जगत् की केवल प्रातिभाषिक सत्ता है।